B-2
L-21
Ancient History

शिशुनाग वंश

- शिशुनाग ने अंतिम हर्यक वंशीय शासक नागदशक की हत्या करके शिशुनाग वंश की स्थापना की।
- शिशुनाग ने अवन्ति और वत्स को मगध में मिलाया।
- शिशुनाग ने वैशाली को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।
- शिशुनाग के बाद इस वंश का महत्वपूर्ण शासक कालाशोक (काकवर्ण) था।
- कालाशोक के काल में ही द्वितीय बौद्ध संगीति आयोजित हुई।
- इस वंश का अंतिम शासक महानंदिन / नंदिवर्धन था।

नंद वंश

- संस्थापक – महापद्मानंद
- महापद्मानंद को पुराणों में सर्वक्षेत्रांतक कहा गया है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- महापद्मानंद की उपाधि :- एकराट, एकक्षत्रिय, भार्गव
- महापद्मानंद के पुत्र धनानंद की हत्या करके चन्द्रगुप्त मौर्य, मौर्य वंश की स्थापना करते हैं।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

भारत में विदेशी आक्रमण

* हखमनी (ईरानी) आक्रमण:- भारत पर पहला विदेशी आक्रमण ईरान के हखमनी वंश ने किया था।

↳ जानकारी के स्रोत:- हेरोडोट्स, एरियन, स्ट्रैबो का वर्णन

↳ आक्रमण में पहली सफलता डेरियस I (दारा I) को मिली।

↳ डेरियस I के तीन अभिलेख { बेहिस्तून, पर्सिपोलस, नक्शेरुस्तम

↳ हेरोडोट्स के अनुसार, डेरियस I ने भारत के जिस भाग पर आक्रमण किया वह पारसीक साम्राज्य का 20 वां प्रांत बना। इस प्रांत में कम्बोज एवं गांधार शामिल थे।

↳ हखमनी शासक डेरियस III का ग्रीक शासक सिकंदर से युद्ध हुआ परिणामस्वरूप हखमनी वंश का पतन हो गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

• हखमनी आक्रमण का प्रभावः-

- भारत एवं ईरान के मध्य समुद्री मार्ग की खोज
- विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन
- पश्चिमोत्तर भारत में दाएं से बाएं लिखी जाने वाली खरोष्ठी लिपि का प्रसार
- भारत में अरेमाइक लिपि का प्रसार
- भारत में अभिलेख उत्कीर्ण करवाने की परम्परा की शुरुआत

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

* यूनानी / ग्रीक आक्रमण:-

- भारत में मकदूनिया के शासक सिकंदर का आक्रमण हुआ।
- सिकंदर के आक्रमण के समय पश्चिमोत्तर भारत
- यूनानी आक्रमण के समय पश्चिमोत्तर भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था जिनमें से कुछ गणतंत्रात्मक तथा कुछ राजतंत्रात्मक थे।

↳ 326 ई॰पू॰ में सिकंदर ने बल्ख (बैक्ट्रिया), काबुल होते हुए हिन्दुकुश पर्वत को पार किया।

↳ वितस्ता (झेलम) नदी के तट पर सिकंदर और पौरव शासक पोरस के मध्य युद्ध हुआ जिसे 'हाइडेस्पीज का युद्ध' कहा गया।

↳ सिकंदर ने अपना साम्राज्य सेनापति फिलीप की देखरेख में छोड़ दिया तथा वापस यूनान जाते समय 322 ई॰पू॰ बेबीलोन में सिकंदर की मृत्यु हो गयी।

• यूनानी / ग्रीक आक्रमण के प्रभाव:-

↳ भारत में हेलिनिस्टिड / इण्डो ग्रीक / गांधार कला का विकास

↳ भारत में पहली बार मानड सिक्कों का प्रचलन

↳ भारत में यूनानी शासकों ने प्रथम बार सोने के सिक्के जारी किए।

↳ सिक्कों पर राजाओं के चिह्न जारी करने की तिथि अंकित तथा द्विभाषायी सिक्कों की शुरुआत

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

मौर्य साम्राज्य

• मौर्य साम्राज्य के संदर्भ में जानकारी के प्रमुख स्रोत हैं:-

1. साहित्यिक स्रोत
2. विदेशी विवरण
3. पुरातात्विक स्रोत

• साहित्यिक स्रोतः-

↳ पुराण
↳ कौटिल्य का अर्थशास्त्र
↳ विशाखदत्त का मुद्राराक्षस
↳ सोमदेव का कथासरित्सागर
↳ क्षेमेन्द्र का बृहत्कथामंजरी
↳ पतंजलि का महाभाष्य
↳ कुछ बौद्ध ग्रंथ - दीपवंश, महावंश, दिव्यावदान
↳ कुछ जैन ग्रंथ - कल्पसूत्र, परिशिष्टपर्वन

• विदेशी विवरणः-

↳ स्ट्रैबो, एरियन, जस्टिन, प्लूटार्क, मेगास्थनीज, डायमेकस, डायोनोसियस इत्यादि लेखकों का विवरण

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

↳ विदेशी लेखक स्ट्रैबो और जस्टिन के विवरण में सैन्ड्रोकोट्स का उल्लेख मिलता है तथा एरियन एवं प्लूटार्क के विवरण में एन्ड्रोकोट्स का उल्लेख मिलता है।

↳ विलियम जोंस पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने सैन्ड्रोकोट्स की पहचान चन्द्रगुप्त मौर्य के रूप में की।

• पुरातात्विक स्रोत:-

↳ अशोक के अभिलेख

↳ रुद्रदमन का जूनागढ़ अभिलेख

↳ पंचमार्क सिक्के

↳ महास्थान अभिलेख

↳ उत्तरी काले चमकदार / पालिश वाले मृदभाण्ड (NBPW)

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning KHAN SIR

* चन्द्रगुप्त मौर्य (323 - 295 ई॰पू॰) :-

- ग्रीक लेखक एप्पियानस ने चन्द्रगुप्त मौर्य और सेल्यूकस निकेटर के बीच युद्ध का वर्णन किया।
- यूनानी लेखक ट्वटार्क के अनुसार, चन्द्रगुप्त मौर्य ने 6 लाख की सेना लेकर सम्पूर्ण भारत पर अधिकार कर लिया।
- यूनानी लेखक जस्टिन भी इसी प्रकार की चर्चा करता है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने तत्कालीन यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर को पराजित किया। तत्पश्चात् संधि हुई और वैवाहिक संबंध स्थापित हुआ।
- चन्द्रगुप्त मौर्य का विवाह सेल्यूकस निकेटर की पुत्री से हुआ, जिसमें चन्द्रगुप्त मौर्य को एरिया (हेरात), अराकोसिया (कंधार), जेड्रोसिया एवं पेरिपेनिसडाई (काँधार) का क्षेत्र दहेज के रूप में मिला।
- सेल्यूकस निकेटर ने मेगास्थनीज को अपना

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

इत बनाकर चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा।

- चन्द्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य विस्तार:-

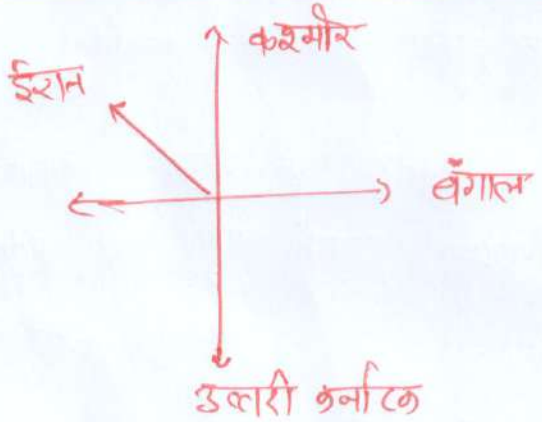

- चन्द्रगुप्त मौर्य के दक्षिण विजय / शासन की जानकारी अहनानुरु और मुरनानुरु नामक ग्रंथ से मिलती है।

=

- चन्द्रगुप्त मौर्य के बंगाल विजय तथा प्रशासन की जानकारी महास्थान अभिलेख से मिलती है।
- जैन ग्रंथों के अनुसार, चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन के अंतिम समय में 12 वर्षों तक भीषण अकाल पड़ा।
- अपने जीवन के अंतिम समय में चन्द्रगुप्त मौर्य भद्रबाहु के साथ श्रवणबेलगोला चले गए एवं 298 ई.पू. में सल्लेखना द्वारा अपने शरीर का त्याग कर दिया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR